ड्रैगन फ्रूट (कमलम) उत्पादन विधि
(Package & practices of dragon fruit)

ड्रैगन फ्रूट, हिलोकेरस केक्टेसिया परिवार से संबंधित है। इसे होनोलुलु रानी, पिताया फल तथा कमलम के नाम से भी जाना जाता है। यह फल थाइलैंड, वियतनाम, इजरायल और श्रीलंका में बहुत लोकप्रिय हैं। यह संतरा, आम, पपीता, केला, सेब आदि की तुलना में अधिक पौष्टिक और लाभदायक फल है। ड्रैगन फ्रूट बाहर से अनन्नास की भांति दिखाई देता है, लेकिन अन्दर से गूदा सफेद और काले छोटे–छोटे बीजों से भरा हुआ नाशपाती या कीवी की तरह होता है। इस आकर्षक एवं रहस्यमय फल का रंग लाल–गुलाबी होता है। इसकी त्वचा में हरे रंग की पंक्तियां होती हैं, जो ड्रैगन की तरह दिखाई देती हैं इसलिए इसको ड्रैगन फ्रूट के नाम से भी जाना जाता है। भारत में इसकी खेती हाल ही में प्रचलित हुई है। इस फल का नाम ड्रेगन फ्रूट से बदल के गुजरात सरकार ने कमलम कर दिया है। कई शहरी उपभोक्ता, जो मधुमेह, कार्डियो–वैस्कुलर और अन्य तनाव संबंधी बीमारियों से पीड़ित हैं और प्राकृतिक उपचार को प्राथमिकता देते हैं ड्रैगन फ्रूट उन लोगों के लिए बहुत फायदेमंद है।

ड्रैगन फ्रूट के स्वाथ्य लाभ (Health benefits of dragon fruit)

- ड्रैगन फ्रूट कॉलेस्ट्रॉल को कंट्रोल करने में मदद करता है।
- शुगर डायबिटीज के रोगियों के लिए फायदेमंद है।
- ड्रैगन फ्रूट फाइबर युक्त होता है, जो आपके शरीर में जरूरी पोषक तत्व की कमियों को पूरा करता है।
- इसके सेवन से कार्डियोवैस्कुलर रोग (सी.वी.डी) होने का खतरा काम हो जाता है।
- हार्ट अटैक जैसे गंभीर रोगों से बचाव करता है।
- ड्रैगन फ्रूट में एंटीअक्सीडेंट गुण भरपूर मात्रा में पाए जाते हैं।
- पोटैशियम और विटामिन सी ड्रैगन फ्रूट में प्रचुर मात्रा में होते हैं।

ड्रैगन फ्रूट के मुख्य प्रकार (Types of dragon fruit)

बाहरी रंग और गूदे के आधार पर यह फल मुख्य रूप से तीन प्रकार का होता है:

- सफेद गूदा वाला, लाल रंग का फल
- लाल गूदा वाला, लाल रंग का फल

- सफेद गूदा वाला, पीले रंग का फल पोषक तत्व

जलवायु (Climate)

ड्रैगन फ्रूट की खेती के लिए उष्ण जलवायु जिसमें निम्नतम वार्षिक वर्षा 50 से.मी. और तापमान 20 से 36 डिग्री सेल्सियस के मध्य तथा उच्च आद्रता हो, सर्वोत्तम मानी जाती है। पौधों के उचित विकास एवंम फल उत्पादन के लिए इन्हें अच्छी रोशनी व धूप वाले क्षेत्र में लगाना चाहिए। इसकी खेती के लिए सूर्य की ज्यादा रोशनी उपयुक्त नहीं होती।

मृदा (Soil)

इस फल की खेती के लिए उचित जल निकास वाली रेतीली दोमट मृदा से लेकर काली दोमट मृदा जो कि कार्बिनक पदार्थ से भरपूर तथा जिसका पी–एच मान 6.5 से 7 के मध्य हो अच्छी मानी जाती है।

प्रवर्धन (Propagation)

ड्रैगन फ्रूट का प्रवर्धन कटिंग द्वारा होता है, लेकिन इसे बीज से भी लगाया जा सकता है। बीज से लगाने पर यह फल देने में ज्यादा समय लेता है, जो किसान के दृष्टिकोण से सही नहीं है इसलिए बीज वाली विधि व्यावसायिक खेती के लिए उपयुक्त नहीं है। कटिंग से इसका प्रवर्धन करने के लिए कटिंग की लंबाई 20 सें.मी. रखते हैं। इसको खेत में लगाने से पहले गमलों/पालीथिन की थैली में लगाया जाता है। इसके लिए गमलों में सूखे गोबर, बलुई मृदा तथा रेत को 1:1:2 के अनुपात से भरकर छाया में रख दिया जाता है। कटिंग को गमलों/पालीथिन थैली में लगानें से पूर्व ट्रायकोडर्मा विरिडी के 5 ग्राम प्रति लीटर पानी के घोल में 20 मिनट तक डुबोनें के बाद लगाना चाहिए।

गड्ढा खुदाई एवं भराई (Pit digging and filling)

अधिक उत्पादन के लिए पौधे से पौधे एवं पंक्ति से पंक्ति के बीच की दूरी 2×3 मीटर रखते हैं। एक एकड़ में लगभग 650 पौधे लगते हैं। गड्ढे का आकार 60×60×60 सें.मी. रखते हैं। गड्ढों की खुदाई का कार्य मई माह में करते हैं और गड्ढों को 15 दिन के लिए खुला छोड़ देते हैं जिससे मिट्टी में उपस्थित रोगजनक कीटांणु एवं हानिकारक कीट तथा उनके अण्डे तेज धूप के प्रभाव में आकर नष्ट हो जायें।

गड्ढा भराई के लिए प्रति गड्ढा 10 किलोग्राम सड़ी हुई गोबर की खाद/घनजीवामृत, 1 किलोग्राम नीम खली, 1 किलोग्राम महुआ/सरसों/अरण्डी खली, 250 ग्राम जिप्सम तथा 50 ग्राम ट्रायकोडर्मा पावडर को मिलाकर भरना चाहिए।

पौध रोपण एवं सहारा देना (Plantation and Staking)

ड्रैगन फ्रूट के पौधे जून से अगस्त तक गर्म और आर्द्र वातावरण में रोपण कर सकते हैं। यह एक कैक्टस बेल है और इनके फल काफी बडे होते हैं, तो इन्हें खड़े होने के लिए

सहारे की जरूरत पड़ती है इसके लिए प्रत्येक गड्ढे के पास 6 फीट ऊँचाई के लकडी/ आरसीसी के खम्भें (पोल) लगाने होंगे।

कटाई एवं छंटाई (Training and Pruning)

पौधों की सीधी वृद्धि एवं विकास के लिए इनको लकड़ी व सीमेंट के खंभों से सहारा प्रदान करना चाहिए। अपरिपक्व पादप तनों को इन खंभों से बांधकर, पार्श्विक शाखाओं को सीमित रखते हुए दो से तीन मुख्य तनों को बढ़ने के लिए छोड़ देना चाहिए। इसके बाद इसके ढांचे को गोलाकार रूप में सुरक्षित कर लेना चाहिए।

खरपतवार नियंत्रण (Weed control)

खरपतवार की रोकथाम के लिए आवश्यकतानुसार समय–समय पर निराई–गुड़ाई करना चाहिए।

पोषकतत्व प्रबंधन (Nutrinets management)

अधिक उत्पादन लेने के लिए प्रत्येक पौधे को अच्छी सड़ी हुई 10 से 15 कि.ग्रा. गोबर या कम्पोस्ट खाद/घनजीवामृत, 250 ग्राम नीम की खली, 250 ग्राम जिप्सम, 250 ग्राम रॉक फास्फेट, 50 ग्राम ट्रायकोडर्मा पावडर का मिश्रण बनाकर पौधों को फूल आने से पहले (अप्रैल में), फल विकास अवस्था (जुलाई–अगस्त) और फल तुड़ाई के बाद (दिसबंर) में देना चाहिए।

सिंचाई (Irrigation)

ड्रैगन फ्रूट के पौधे को ज्यादा पानी की आवश्यकता नहीं होती है। फूल आने एवं फल विकास के समय नमी की पर्याप्त मात्रा के लिए सिंचाई करनी चाहिए। टपक सिंचाई तकनीक ड्रैगन फ्रूट की खेती के लिए सबसे अनुकूल माना गया है। अधिक पानी और जड़ के पास पानी इकट्ठ होने से ड्रैगन फ्रूट की फसल खराब हो सकती है इसलिए खेतों में जल निकासी की अच्छी सुविधा होनी चाहिए।

प्रमुख कीट एवं रोग तथा उनका नियंत्रण (Major insect & disease and their control)

सामान्यतः ड्रैगन फ्रूट में कीट और व्याधियों का प्रकोप कम होता है। फिर भी इसमें एंथ्रेक्नोज रोग व थ्रिप्स कीट का प्रकोप देखा गया है। एंथ्रेक्नोज रोग के नियंत्रण के लिए ट्रायकोडर्मा पावडर के 5 ग्राम दवा प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिए। थ्रिप्स के लिए नीमास्त्र का 250 मिली लीटर प्रति 10 लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिए।

फलों का आना एवं तुडाई (Fruiting and harvesting)

ड्रैगन फूट एक प्रकार की कैक्टस बेल है। मई जून में इसमें फूल आते हैं। अगस्त से दिसंबर तक फल लगते हैं। मानसून में ड्रैगन फूट तैयार होता है। मानसून के चार महीने में प्रत्येक 40 दिनों के अंतराल पर फल पकते है। पुष्पण के एक महीने बाद फल तुड़ाई के

लिए तैयार हो जाते हैं। इस अवधि के दौरान इसकी 6 तुड़ाई की जा सकती है। ड्रैगन फ्रूट के कच्चे फल हरे रंग के होते हैं, जो पकने पर लाल रंग में परिवर्तित हो जाते हैं। फलों की तुड़ाई का सही समय रंग परिवर्तित होने के तीन–चार दिनों बाद का होता है। फलों की तुड़ाई दरांती या हाथ से की जाती है।

उपज (Yield)

ड्रैगन फ्रूट का पौधा एक सीजन में 3 से 4 बार फल देता है। प्रत्येक फल का वजन लगभग 300 से 800 ग्राम तक होता है। एक पौधे पर 50 से 120 फल लगते हैं। इस प्रकार इसकी औसत उपज 5 से 6 टन प्रति एकड़ होती है। यह फल एक एकड़ की खेती करने पर 14 लाख रुपये का मुनाफा देता है।

पैकेजिंग (Packaging)

सभी ड्रैगन फलों को कटाई के उपरांत उसी दिन पैक किया जाता है, फिर निर्यात के लिए कंटेनर पर लोड करने से पहले ठंडा किया जाता है। यह सुनिश्चित करने के लिए इस प्रक्रिया को सख्ती से लागू किया जाना चाहिए ताकि फल की शेल्फ लाईफ लंबी हो।

फलों का संग्रहण (Storage of fruits)

ड्रैगन फ्रूट को कमरे के तापमान यानी 25 डिग्री सेल्सियस पर 5 से 7 दिन तक संग्रह किया जा सकता है। 8 डिग्री सेल्सियस तापमान पर इसे 22 दिन तक संग्रहित किया जा सकता हैं।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें

डा. शिवकुमार सिंह भदौरिया
उद्यानिकी विशेषज्ञ
सृजन, झाँसी (उ.प्र.)
मो.: 9425749707
इमेलः shivkumarbhadauria@srijanindia.org